International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 11 Issue 9 September. 2022 || PP. 151-162

मध्यप्रदेश के शिवपुरी ज़िले में वन संसाधनों का भौगोलिक अध्ययन

ओमप्रकाश विमल , *शोधार्थी , भूगोल विभाग*
शोध केन्द्र :– एम. एल. बी. शासकीय उत्कृष्ट महाविद्यालय , ग्वालियर , मध्यप्रदेश
जीवाजी विश्वविद्यालय , ग्वालियर , मध्यप्रदेश

परिचय :–

शिवपुरी जिला उत्तर में मुरैना, ग्वालियर और दतिया जिलों द्वारा, पूर्व में यूपी के झांसी जिले द्वारा, पश्चिम में राजस्थान के कोटा जिले और दक्षिण में गुना जिले से घिरा हैं। जिला मुख्यालय शिवपुरी, ग्वालियर से 113 किलोमीटर और गुना से 98 किलोमीटर पर एनएच –46 पर स्थित है। जिला ज्यादातर छोटे पहाड़ी चोटी पर स्थित हैं जो पर्णपाती जंगलों से ढके हैं जहां ढलान सदा वनस्पति और चारों ओर अच्छे जंगलों के साथ सौम्य हैद्य

शिवपुरी जिले के भूगोल में हरी–भरी वनस्पतियों के साथ छोटे–छोटे पहाड़ी शिखर शामिल हैं। जलवायु आमतौर पर ठंडी और शुष्क होती है। शिवपुरी जिले के भूगोल में 18139 हेक्टेयर वन क्षेत्र शामिल है और कुल भौगोलिक क्षेत्र 10298 वर्ग किलोमीटर है। मध्य प्रदेश राज्य में शिवपुरी जिला उत्तर में मुरैना जिले, ग्वालियर जिले और दतिया जिले के साथ, पूर्व में उत्तर प्रदेश राज्य के झांसी जिले, पश्चिम में राजस्थान राज्य के कोटा जिले और गुना जिले के साथ अपनी सीमाओं को साझा करता है। दक्षिण। शिवपुरी का जिला मुख्यालय राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या तीन (आगरा–बॉम्बे राष्ट्रीय राजमार्ग) पर ग्वालियर से लगभग एक सौ तेरह किलोमीटर और गुना से लगभग अठानवे किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। मध्य प्रदेश राज्य का यह जिला ज्यादातर पर्णपाती जंगलों से ढकी छोटी पहाड़ी चोटियों पर स्थित है, जहाँ ढलान कोमल है और चारों ओर अच्छे जंगल हैं,

मध्य प्रदेश में शिवपुरी जिला 10298 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैला है, जबकि खेती के तहत कुल क्षेत्रफल 409264 वर्ग किलोमीटर है और वनों से आच्छादित क्षेत्र 18139 हेक्टेयर है। शिवपुरी जिला चौबीस डिग्री छह मिनट और पच्चीस डिग्री छह मिनट उत्तरी अक्षांश और सत्तर सात डिग्री और अठहत्तर डिग्री चार मिनट पूर्व देशांतर के बीच स्थित है। जिला समुद्र तल से 521.5 मीटर ऊपर स्थित है।

शिवपुरी जिले को इसके भूविज्ञान के आधार पर तीन मुख्य प्रभागों में विभाजित किया जा सकता है। बुंदेलखंड ट्रैप में मुख्य रूप से प्री–धारवारियन ग्रेनाइट शामिल हैं, जिसमें कम खेती वाली ऊपरी भूमि और उथली घाटी शामिल हैं। यह लगभग एक हजार पांच सौ उनतालीस वर्ग मील के क्षेत्र के साथ जिले के पूर्वी आधे हिस्से को कवर करता है। डेक्कन ट्रैप में मुख्य रूप से लहरदार मैदान और पहाड़ी की सपाट चोटी वाली श्रेणियां शामिल हैं। यह जिले के दक्षिणी भागों की ओर चार सौ छब्बीस वर्ग मील के क्षेत्र को कवर करता है – भदरवास की ओर, बारोकरा लेटराइट और एल्यूमीनियम भी इस क्षेत्र में पाए जाते हैं और 374.80 वर्ग मील के क्षेत्र को कवर करते हैं। ऊपरी विंध्य में, इस क्षेत्र में कैमूर रीवा और भांडेर के बलुआ पत्थर आमतौर पर पाए जाते हैं। डिप्स बहुत उथले हैं और यह बताता है कि विंध्य काल से बहुत कम गड़बड़ी हुई है और यह क्षेत्र जिले के पश्चिमी आधे हिस्से में है।

शिवपुरी जिले की जलवायु ठंडी और शुष्क है। गर्म मौसम की स्थिति अप्रैल के महीने के मध्य से शुरू होती है और मई के मध्य तक रहती है। जून के महीने में तापमान बयालीस डिग्री सेल्सियस को छू जाता है और जून के अंत तक या जुलाई के पहले सप्ताह तक मानसून टूट जाता है और मौसम ठंडा हो जाता है। शिवपुरी जिले में बारिश अरब सागर से होती है ।

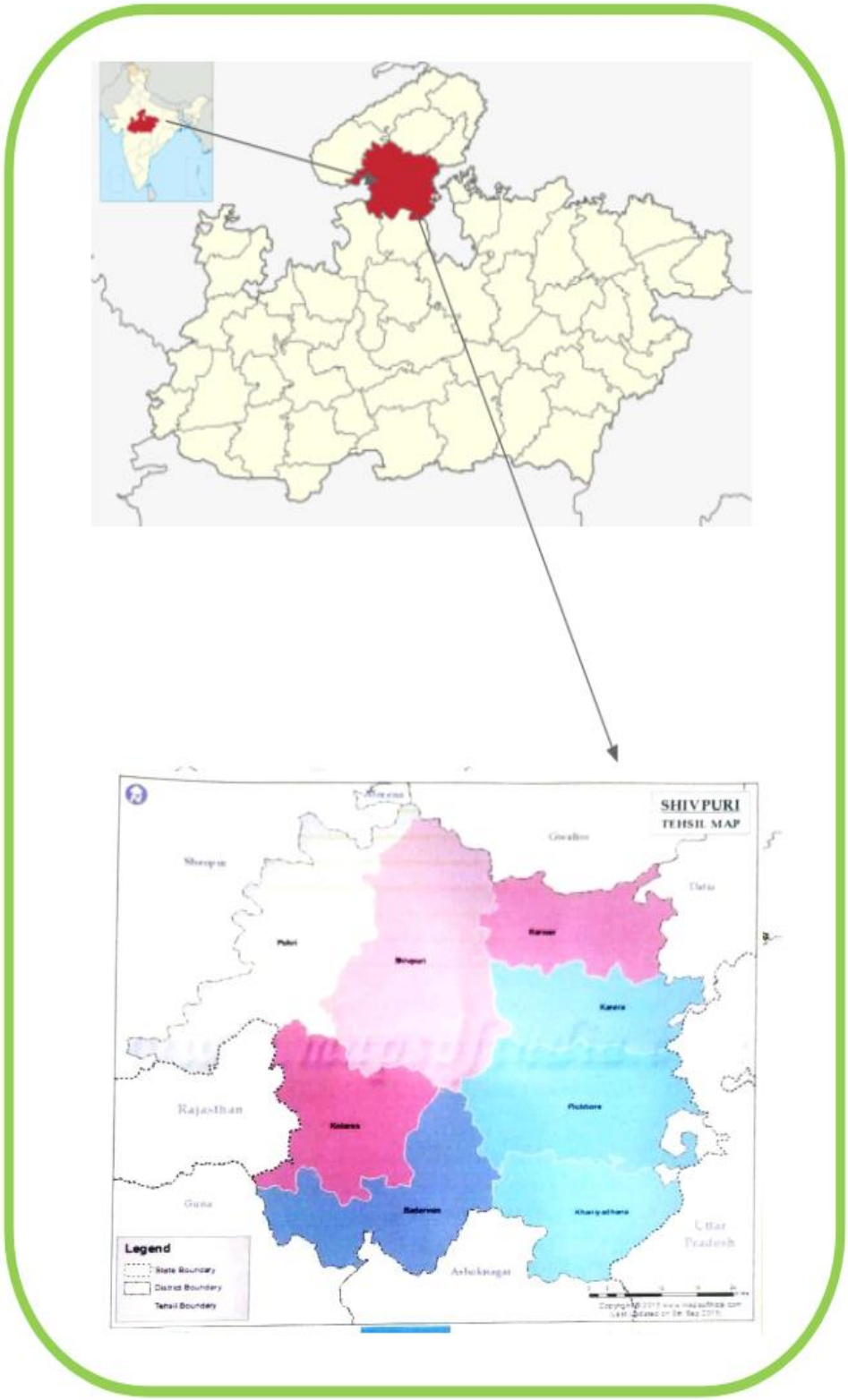

बारिश का मौसम आमतौर पर सितंबर के अंत तक खत्म हो जाता है और जिले में औसतन 875 मिमी बारिश होती है। जिले में आमतौर पर पाए जाने वाले पेड़ों की विभिन्न प्रजातियाँ हैं जिनमें खैर, धो, करधई, सालज, पलास, तेंदू, महुआ, करे, करच, साजा, कोहा, साज.धामन कैम, तिनाच, सेमल, अमलतास और जामुन के पेड़ शामिल हैं ।. वनों की अंधाधुंध कटाई और कटाई के कारण जिले में वन्यजीवों की संख्या में लगातार कमी हो रही है। प्राचीन काल में जंगल घने थे और अच्छी संख्या में जानवर देखे जा सकते थे। जिले में एक राष्ट्रीय उद्यान है जहाँ अच्छी संख्या में जानवर देखे जा सकते हैं।

उद्देश्य :–

1. मध्य प्रदेश के वन संसाधनों का भौगोलिक अध्ययन करना ।
2. शिवपुरी जिले के वन संसाधनों की समस्या व संरक्षण का विश्लेषण करना ।

परिकल्पना :–

मध्यप्रदेश के शिवपुरी जिले में वन संसाधनों की समस्या बढ़ती जा रही है ।

आंकड़ो का स्त्रोत :–

प्रस्तुत शोध पत्र में प्राथमिक व द्वितीयक आंकड़ो का उपयोग विभिन्न सरकारी विभाग , वन विभाग शिवपुरी , मध्यप्रदेश वन व पर्यावरण विभाग से प्राप्त करके किया गया है ।

भौगोलिक संरचना :–

जिला को भोगोलिक स्थिति के आधार पर तीन मुख्य विभागों में विभाजित किया जा सकता हैः–

बुंदेलखंड जाल :–

इसमें ज्यादातर पूर्व–धारवीय ग्रेनाइट होते हैं। इसमें 1,539 वर्ग मील (3985.99 वर्ग किमी) के क्षेत्र के साथ जिले के पूर्वी हिस्से को शामिल किया गया है।

ऊपरी विंध्या :–

कैमुर रीवा और भांडेर का बलुआ पत्थर आमतौर पर इस क्षेत्र में पाए जाते हैं। बघार बहुत उथले हैं और इससे पता चलता है कि विंध्य काल के बाद से बहुत कम परिवर्तन हुआ है। इस क्षेत्र का जिले के पश्चिम में आधे हिस्से पर कब्जा है।

डेक्कन जाल :–

यह मुख्य रूप से पहाड़ी के अपर्याप्त मैदानी और फ्लैट टॉप वाली श्रेणियों का गठन करता है। इसमें जिले के दक्षिणी हिस्सों की तरफ 426 वर्ग मील (1103.34 वर्ग किमी) क्षेत्र शामिल है– भद्रवास की तरफ, बरोकरा लेटरटाइट और एल्यूमिनियम भी इस क्षेत्र में पाए जाते हैं और 374.80 वर्ग मील (968.66 वर्ग किमी) के क्षेत्र को कवर करते हैं।

नदियां और जलनिकास :–

मुख्य नदियों में पार्वती, सिंध, कुनो और बेतवा हैं , जो जिले से गुज़रती हैं। पार्वती सिंध नदी की एक सहायक है और ग्वालियर जिले के पवा के पास इसके साथ जुड़ती है। सिंध गुना जिले से प्रवेश करती है और ग्वालियर और दतिया जिलों के बीच की सीमा बनाने के लिए उत्तर की ओर बहती है और आखिरकार भिंड में चंबल नदी में शामिल हो जाती है। कुनो चंबल की सहायक है। यह शिवपुरी जिले से मुरैना तक बहती है और चंबल में शामिल हो जाती है। बेतवा या वेत्रवती रायसेन जिले से निकलती हैं और विदिशा, गुना, शिवपुरी और झांसी जिलों से गुजरती है। माता टीला बांध इस नदी पर बना हुआ है ।

जलवायु :–

शिवपुरी में ठंडा और शुष्क जलवायु है। गर्म मौसम अप्रैल के मध्य से शुरू होता है और मई के मध्य तक रहता है। जून में तापमान 45 डिग्री से. को छू लेता हैद्य जिले में जून के अंत तक या जुलाई के पहले सप्ताह तक मानसून आ जाता है और मौसम आर्द्रता के कारण ठंडा हो जाता है। जिले को अरब सागर से बारिश मिलती है। सितंबर के अंत तक बारिश खत्म हो जाती है। शिवपुरी में औसत 816.3 मिमी बारिश होती है।

पशुवर्ग :–

जंगल काटने के कारण जिले में वन्य जीवन में लगातार गिरावट आई है। प्राचीन काल में जंगल घने थे और जानवरों की एक अच्छी संख्या देखी जा सकती थी। जिले में एक राष्ट्रीय उद्यान है जहां जानवरों की एक अच्छी संख्या देखी जा सकती है। निम्नलिखित जानवर अभी भी पाए जाते हैं– नहर बाघ (फेलिस टिग्रीस), टेंडुआ–पैंथर (पेलिस पैराडस), लडाया जैकल (कमिन्स ऑरेंस), लकड़बग्गा हिना (हिना स्ट्राटा), भालू, स्लोथ भालू, संभार (कारवास यूनिकोलर), सुअर, जंगली भालू (सस क्रिस्लाटस), लोमड़ी (वल्प्स बेंगालेनेनिस), चिंकारा (गैसल्स बैनेटी), काला हिरण–काली हिरन (एंटेलोप सर्विकाप्रा) और लंगूर। मुख्य पक्षियों में शिकरा हॉक, आम क्रो, कॉमन्स ग्रे हाउस क्रो और सभी काले कौवे, प्रतिद्वंद्वी हरे कबूतर, ग्रे जंगल पक्षी, मोर–पीकॉक, जंगल झाड़ी ब्वेल और बस्टर्ड बटेर पाये जाते हैं द्य

कृषि :–

शिवपुरी मुख्य रूप से एक कृषि प्रधान जिला है इसलिए खेती लोगों का मुख्य व्यवसाय है। खेती पर निर्भरता इस तथ्य से देखी जा सकती है कि जिले के कुल श्रमिकों में से 83.38 प्रतिशत खेती कर रहे हैं जो या तो किसान (70.40þ) या कृषि के रूप में मजदूर (12.98þ) है। चावल, ज्वार, बाजरा, मक्का, गेहूं और जौ मुख्य अनाज फसलें हैं। ग्राम और तुअर (अरहर) जिले में उगाए जाने वाले मुख्य दालें हैंद्य

संचार :–

जिला अपने सड़क संचार में काफी बेहतर है क्योंकि यह आगरा–बॉम्बे नेशनल हाईवे नं 46 पर स्थित जो कि सभी मौसम में सड़क से जुड़ा है। यह सड़क जिले को उत्तर में ग्वालियर, आगरा और दिल्ली और दक्षिण में गुना, भोपाल, उज्जैन, इंदौर और बॉम्बे से जोड़ती है। इस राजमार्ग के अलावा शिवपुरी झांसी से भी राष्ट्रीय राजमार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है जो कानपुर, लखनऊ और उससे आगे तक जाता है। एक और सड़क श्योपुर जिले को जोड़ती है। शिवपुरी को ग्वालियर और गुना से रेल सेवा उपलब्ध है ।

मध्यप्रदेश के वन संसाधन :–

वन एवं वन संपदा की दृष्टि से मध्यप्रदेश में संपन्न राज्य है सकल राज्य घरेलू उत्पाद में वन क्षेत्र का अंश वर्ष 2012–13 में 1.82 पर्सेंट है मध्य प्रदेश को वनो एवं बाघो का राज्य कहा जाता है मध्य प्रदेश का लगभग एक तिहाई भू–भाग वनाच्छादित है वन अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय अनुसंधान शाखा राज्य के जबलपुर में है तथा राज्य में 2.07 परसेंट झाडी वन पाए जाते हैं !

मध्यप्रदेश की पहली वन नीति 1952 में बनी थी ! 4 अप्रैल 2005 को मध्यप्रदेश की नई वन नीति की घोषणा की गई! बनो का शतप्रतिशत राष्ट्रीयकरण (1964) करने वाला देश का प्रथम राज्य मध्य प्रदेश है!

वनों का राष्ट्रीयकरण वर्ष 1970 में किया गया सर्वप्रथम तेंदूपत्ता का राष्ट्रीयकरण किया गया था वन संपदा की दृष्टि से मध्य प्रदेश एक समृद्ध राज्य है मध्यप्रदेश में देश के 41 प्रतिशत सागौन के वृक्ष हैं राज्य के कुल वन संपदा क्षेत्रफल के 17.88 प्रतिशत क्षेत्रों सागौन के हैं ।

मध्यप्रदेश में देश के 50þ साल वृक्ष हैं राज्य के कुल वन क्षेत्रफल के 16.54 प्रतिशत क्षेत्र में साल के वृक्ष के वन हैं! सर्वाधिक वन क्षेत्रफल वाला जिला बालाघाट है जो 4978 वर्ग किलोमीटर है

देहरादून स्टेट फॉरेस्ट रिसर्च इंस्टिट्यूट एंड कॉलेज के 4 क्षेत्रिय अनुसंधान केंद्रों में से एक मध्य प्रदेश के जबलपुर में स्थित है

मध्य प्रदेश वानिकी योजना का आरंभ सितंबर 1995 में किया गया

वनीकरण के लिए 1976 में पंचवर्षीय योजना ऐसे जिलों में चलाई जा रही है जहां राष्ट्रीय वन नीति के निर्धारित मापदंड पर 33þ से कम है

प्रदेश के बालाघाट में वन राजकीय महाविद्यालय की स्थापना 1979 में की गई है

मध्य प्रदेश ईको पर्यटन विकास बोर्ड का गठन शासन ने 12 जुलाई 2005 को किया गया मध्य प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड भोपाल में है मध्य प्रदेश झील संरक्षण प्राधिकरण की स्थापना 2014 में की गई है

मध्यप्रदेश में प्रदूषण नियंत्रण हेतु पर्यावरण नियोजन एवं समन्वय संगठन (अप्को) 5 जून 1981 में स्थापना की गई

वनों का भौगोलिक क्षेत्र :–

वैधानिक दृष्टिकोण से वनक्षेत्र के वर्गीकरण वर्ग किलोमिटर अंतर्गत 61886 वर्ग किलोमीटर आरक्षित वन 31098 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में संरक्षित वन तथा 1705 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में अवर्गीकृत वन है प्रदेश के वन क्षेत्र में कुल 10 राष्ट्रीय उद्यान एवं 31अभ्यारण है अब विवरण तथा राष्ट्रीय उद्यानों के अंतर्गत वन क्षेत्र राज्य में कुल 1 क्षेत्र का 11.4þ है भारत राज्य वन रिपोर्ट के अनुसार राज्य में वनों का विस्तार 94689 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल है जो राज्य के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 30.72 प्रतिशत प्रदेश के कुल वन क्षेत्रफल का 12.38 प्रतिशत है !

सारणी सँख्या :- 1

मध्यप्रदेश में वनों का भौगोलिक क्षेत्रफल

(वर्ग कि.मी. में)

श्रेणी	क्षेत्रफल	भौगोलिक क्षेत्रफल का %
अ.स.व.	6,676.02	2.17
सा.स.व.	34,341.40	11.14
खु.व.	36,465.07	11.83
कुल	**77,482.49**	**25.14**
झाड़ी	6,001.91	1.95

स्त्रोत :- वन विभाग , मध्यप्रदेश

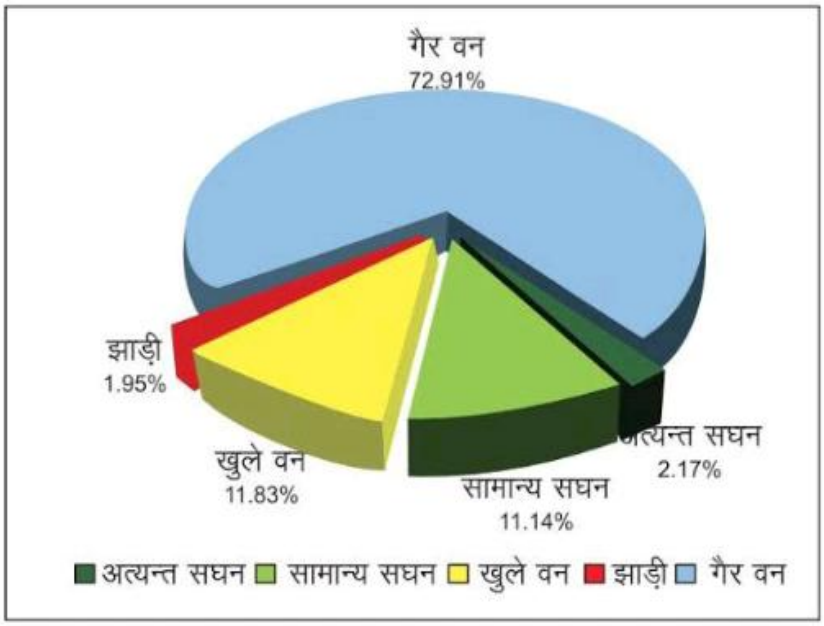

वनों का वर्गीकरण :–

मध्यप्रदेश में सामान्यता उषणकटिबंधीय वन पाए जाते हैं परंतु जल वायु मिट्टी तापमान एवं वर्षा की विविध विधाओं के कारण वनों में विभिन्नता पाई जाती है इन विविधताओं के आधार पर राज्य के वनों को निम्नलिखित चार भागों में बांटा जाता है !

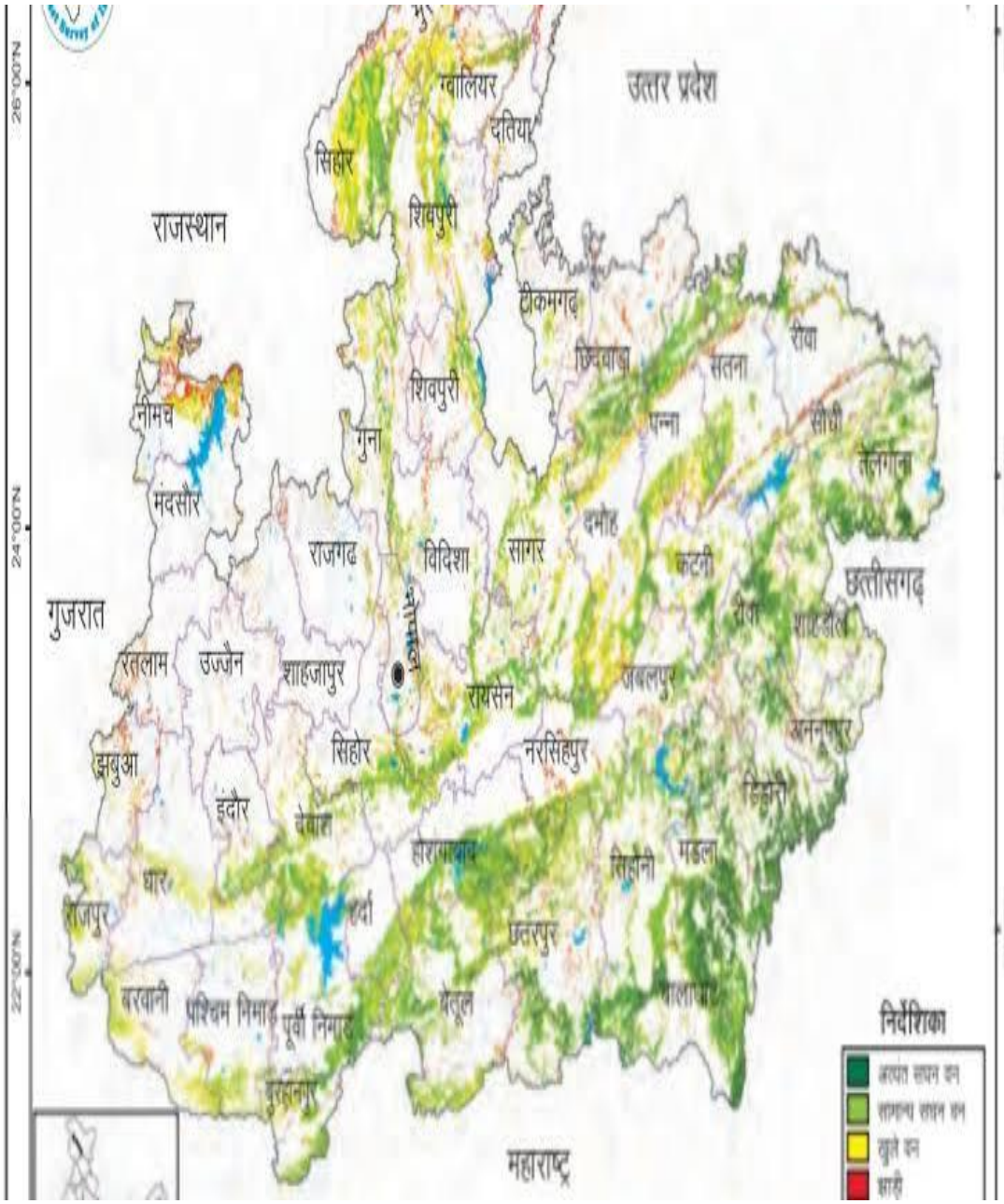

1. उष्णकटिबंधीय आद्र पतझड़ वन :–

उष्णकटिबंधीय आद्र पतझड़ वनों का विस्तार राज्य के बालाघाट दक्षिण छिंदवाड़ा सिवनी जबलपुर मंडला और शहडोल वन व्रतों में हैं !

यवन राज्य में 120 सेंटीमीटर से अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में पाए जाते हैं इन वनों के वृक्ष थोड़े समय के लिए पत्तियां गिराते हैं ।

यह अधिपादप सदाबहार अथवा अर्थ सदाबहार होते हैं इन वनों का प्रमुख वृक्ष साल है परंतु काली मिट्टी वाले क्षेत्रों में सागौन भी पाया जाता है !

2. उष्णकटिबंधीय शुष्क पतझड़ वन :–

राज्य में उष्णकटिबंधीय शुष्क पतझड़ वन शहडोल और जबलपुर वन व्रतों के उत्तरी भागों और संपूर्ण उत्तरी और पश्चिमी बेतूल होशंगाबाद खंडवा इंदौर उज्जैन भोपाल सागर रीवा शिवपुरी एवं गवालियर वन व्रतों में फैले है

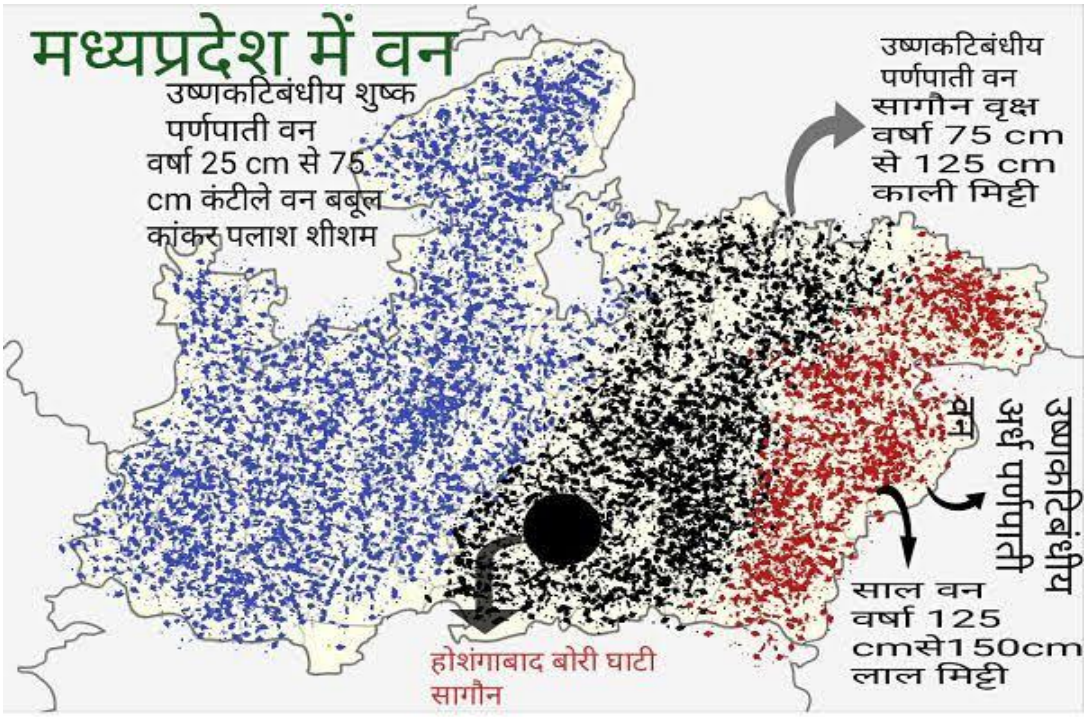

इन दोनों के वृक्ष पानी की कमी को पूरा करने के लिए ग्रीष्मकाल के पहले पत्तियां गिरा देते हैं सागौन इन वनों का मुख्य वृक्ष है तथापि विस्तृत भाग पर मिश्रित वन फैले हुए हैं !

3. कटीले वन :–

कटीले वन राज्य के प्रमुख रूप से चंबल की घाटी में फैले हुए हैं राज्य के उत्तरी और पश्चिमी भाग में वर्षा बहुत कम होती है इन क्षेत्रों में वनों की जगह कटीली झाड़ियां पाई जाती है

4. उपोषण पतझड़ वन

यह वन सतना एवं विंध्यन की ऊंची चोटियों पर पाए जाते हैं इनके वृक्ष एक साथ पत्तियां नहीं गिराते हैं पचमणि के आसपास इसी तरह के वन पाए जाते हैं !

वनों का प्रशासनिक वर्गीकरण

1. आरक्षित वन

रांची में आरक्षित वन 61886 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैली है जो राज्य के कुल वन क्षेत्र का 3.72 þ है ! इन वनों को आवागमन, पशुचारण लकड़ी काटना दंडनीय अपराध माना जाता है आरक्षित वन क्षेत्र में प्रशासकीय नियम अत्यंत कठोर होते हैं सबसे अधिक सुरक्षित होने का खंडवा कावन व्रत में न्यूनतम अनुपात छतरपुर वन व्रत मे है!

2. संरक्षित वन

राज्य में संरक्षित वन 31098 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल पर फैले हुए हैं इंसानों का प्रबंधन प्रशासन की देखरेख में होता है इंसानों में पशुचारण आवागमन एवं विशेष परिस्थिति में अनुमति द्वारा वृक्ष काटने की सुविधा रहती है संरक्षित वनों का वितरण आरक्षित वनों का पूरक है संरक्षित वनों का प्रतिशत हिस्सा सर्वाधिक राजगढ़ में(100þ) तथा सबसे न्यूनतम उज्जैन (þ0)परसेंट पाया जाता है !

सारणी सँख्या :- 2

मध्यप्रदेश में वनों का जिले अनुसार वितरण 2019

तालिका 11.15.4 मध्य प्रदेश का जिलेवार वनावरण

जिला	भौगोलिक क्षेत्रफल	आकलन 2019				भौगोलिक क्षेत्रफल का %	भा.व.स्थि.रि. 2017 के अनुसार परिवर्तन	झाड़ी
		आच्छन्न सघन वन	सामान्य सघन वन	खुले वन	कुल			
अलीराजपुर*	3,182	0.00	211.82	472.60	684.42	21.51	9.42	30.27
अनूपपुर*	3,747	108.97	345.30	414.41	868.68	23.18	20.68	64.96
अशोकनगर	4,674	0.00	266.08	422.96	689.04	14.74	-10.96	122.85
बालाघाट*	9,229	1,409.25	2,638.97	883.84	4,932.06	53.44	-1.94	29.71
बरवानी*	5,427	0.00	186.96	741.03	927.99	17.10	-6.01	36.44
बैतूल*	10,043	230.34	1,938.14	1,495.22	3,663.70	36.48	10.70	167.00
भिंड	4,459	0.00	28.55	78.20	106.75	2.39	-1.25	412.91
भोपाल	2,772	0.00	120.92	207.75	328.67	11.86	-25.33	70.55
बुरहानपुर	3,427	57.92	631.09	605.55	1,294.56	37.78	-14.44	37.64
छतरपुर	8,687	184.06	817.52	756.97	1,758.55	20.24	13.55	304.16
छिंदवाड़ा*	11,815	576.94	2,027.09	1,983.98	4,588.01	38.83	28.01	302.21
दमोह	7,306	2.00	845.79	1,739.39	2,587.18	35.41	-6.82	127.61
दतिया	2,902	0.00	92.11	110.17	202.28	6.97	3.28	80.39
देवास*	7,020	12.00	936.85	1,007.02	1,955.87	27.86	39.87	52.00
धार*	8,153	0.00	116.14	535.11	651.25	7.99	-34.75	90.53
डिंडोरी*	7,470	1,086.94	1,281.17	663.85	3,031.96	40.59	4.96	136.92
गुना	6,390	2.00	414.33	913.41	1,329.74	20.81	-22.26	158.55
ग्वालियर	4,560	1.00	329.23	890.95	1,221.18	26.78	21.18	150.25
हरदा*	3,334	19.00	527.69	409.57	956.26	28.68	-51.74	3.44
होसंगाबाद*	6,703	271.89	1,370.32	780.44	2,422.65	36.14	-11.35	10.20
इंदौर	3,898	0.00	349.08	329.65	678.73	17.41	-0.27	24.25
जबलपुर*	5,211	41.00	502.50	570.43	1,113.93	21.38	-25.07	111.82
झाबुआ*	3,600	0.00	30.97	190.70	221.67	6.16	-7.33	163.17
कटनी	4,950	93.90	608.58	658.82	1,361.30	27.50	9.30	41.17
खण्डवा (पूर्व निमाड़)*	7,352	147.80	1,156.80	784.52	2,089.12	28.42	57.12	19.61
खण्डवा पश्चिम निमाड़)*	8,025	1.00	474.50	830.56	1,306.06	16.27	-2.94	64.98
मंडला*	5,800	691.31	1,091.05	795.15	2,577.51	44.44	8.51	40.78
मंदसौर	5,535	0.00	40.00	201.59	241.59	4.36	-2.41	111.51
मुरैना*	4,989	0.00	96.18	643.99	740.17	14.84	-1.83	402.24
नरसिंहपुर	5,133	61.00	657.34	624.42	1,342.76	26.16	4.76	103.52
नीमच	4,256	0.00	120.64	675.05	795.69	18.70	12.69	385.12
पन्ना	7,135	83.01	1,478.26	1,181.44	2,742.71	38.44	75.71	193.28
रायसेन	8,466	23.00	1,306.51	1,346.75	2,676.26	31.61	-0.74	153.21
राजगढ	6,153	0.00	37.99	134.10	172.09	2.80	4.09	84.80
रतलाम*	4,861	0.00	2.53	57.32	59.85	1.23	4.85	121.98
रीवा	6,314	61.00	386.58	333.57	781.15	12.37	3.15	167.53
सागर	10,252	1.00	1,141.57	1,651.97	2,794.54	27.26	-19.46	197.17
सतना	7,502	12.00	909.70	831.20	1,752.90	23.37	22.90	196.06
सिहोर	6,578	23.90	614.85	719.15	1,357.90	20.64	-46.10	58.74
सिवनी*	8,758	237.08	1,791.14	1,041.37	3,069.59	35.05	-33.41	73.23

contd.

स्त्रोत :- वन विभाग , मध्यप्रदेश

3. अवर्गीकृत वन

राज्य में अवर्गीकृत वन 1705 किलोमीटर वर्ग क्षेत्रफल पर फैले हुए हैं इन वनो मे पशुचारण आवागमन और वन काटने की सुविधा रहती है!

वन संपदा

वन संपदा की दृष्टि से मध्यप्रदेश के वन काफ़ी संपन्न हैं ! राज्य के वनों से निम्नलिखित वन उपजे एकत्रित की जाती है !

सागौन :– राज्य में सागवान के वृक्ष 18332.67 (वर्ग किलोमीटर)क्षेत्रफल पर फैले हैं पवन 75125 सेंटीमीटर वर्षा वाले काली मृदा के उत्तरी क्षेत्र में पाए जाते हैं इनकी लकड़ी मारती है जो करो और लकड़ी के सामान बनाने के काम आती है होशंगाबाद की एक बोरी घाटी मे ये वृक्ष अधिक पाए जाते हैं !

साल :–मध्य प्रदेश में देश के 50þ साल वृक्ष सिंह राज्य के कुल क्षेत्रफल के 16.54 प्रतिशत क्षेत्र साल के व्रक्ष पये जाते है ! साल की लकड़ी का प्रयोग रेलवे स्लीपर एवं इमारती लकड़ी में होता है यह प्रदेश के लाल पीली मृदा वाले क्षेत्र में पाए जाते हैं मंडला जिले में साल वृक्ष अधिक पाए जाते हैं परंतु शाल के वृक्ष बौर नामक कीड़े से क्षतिग्रस्त हो जाते हैं !

बाँस :–राज्य में बांस दक्षिणी और पूर्वी जिला तथा शहडोल अनूपपुर बालाघाट बेतूल खंडवा और होशंगाबाद में पाया जाता है बांस का प्रयोग अमलाई एवं नेपानगर के कागज कारखानों में किया जाता है बालाघाट में होशंगाबाद वन बाँस के प्रमुख उत्पादक हैं !

खैर :–मध्यप्रदेश में शिवपुरी तथा बानमोर में कत्था बनाने के कारखाने हैं जिन्हें खेर की लकडी शिवपुर सिवनी गुना एवं मुरैना के वनों से मिलती है राज्य में शहर जबलपुर सागर दमोह उमरिया जिले में भी पाया जाता है !

लाख :– मध्य प्रदेश में लोक मंडला जबलपुर सिवनी शहडोल जिला होशंगाबाद के फलों में पाया जाता है प्रदेश में प्रति वर्ष 40000 टन लाख का उत्पादन होता है इसका प्रयोग सौंदर्य प्रसाधन के रूप में किया जाता है !

हर्रा :– हर्रा मुख्यतः छिंदवाड़ा बालाघाट मंडला शिवपुर एवं शहडोल की के वनो से प्राप्त होता है इसका प्रमुख चर्म शोधन के रूप में किया जाता है !

गोंद :– गोंद का उत्पादन ग्वालियर शिवपुरी एवं खंडवा वन प्रांतों में प किया जाता है यह बेतूल हावड़ा एवं सेनिलियन क्षेत्रों से प्राप्त होता है इसका प्रयोग खाने में पेंट उद्योग पेपर पेंटिंग दवा उद्योग कॉस्मेटिक आदि क्षेत्रों में होता है !

भिलाला :–भिलाला मुख्य रुप से छिंदवाड़ा बंद व्रत से एकत्रित किया जाता है इसका प्रयोग स्याई एवं पेंट बनाने में किया जाता है!

तेंदूपत्ताः– मध्य प्रदेश तेंदूपत्ता का सबसे बड़ा उत्पादक राज्य है तेंदू पत्ते से वीडी बनाने के उद्योग मुख्यता सागर जबलपुर शहडोल एवं सीधी मे है म देश के वीडि उत्पादन का 60þ मध्यप्रदेश के उत्पादित करता है

राज्य वन नीति 2005

4 अप्रैल 2005 को मंत्रिपरिषद की बैठक में राज्य की नवीन वन नीति को मंजूरी प्रदान की गई !

इससे पूर्व मध्य प्रदेश में अविभाजित प्रदेश की वर्ष 1992 की राज्य वन नीति लागू थी !

लगभग 52 वर्षों का समय बीत जाने के कारण आनेको परिवर्तन तथा राज्य की विशेषता भौगोलिक सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों की आवश्यकता के फलस्वरूप इस नीति में व्यापक परिवर्तन की आवश्यकता थी !

वर्ष 1998 में पुनरीक्षित राष्ट्रीय वन नीति घोषित की गई जिसके प्रावधानों के अनुसार रूप में ही राज्य की वन नीति व्यवस्थाएं किया जाना आवश्यक थी !

पूर्व की वन नीति में जहां स्वराज्य चाय को प्राथमिकता दी गई थी वर्तमान नीति में इसे गुण मानते हुए मुख्य बनो के संवहनीय प्रबंधन के पर्यावरण संरक्षण चरण स्थानीय संविधान को रोजगार उपलब्ध कराना, उनकी आय के साधन बनाना तथा उनकी मूलभूत वन आधारित अवश्यकता को पूर्ण करना है !

पूर्व की नीति में धन प्रबंधन कार्य जहां विभाग के कड़े नियंत्रण में ठेकेदारों के माध्यम से कराया जाता था वर्तमान नीति में जनभागीदारी से बनाकर विकास को महत्व दिया गया है!

नवीन वन नीति में इमारती कास्ट के उत्पादन के साथ–साथ लघु वनोपज वास तथा ओषधि प्रजातियों के उत्पादन प्रसंस्करण तथा मूल्य संवर्धन पर विशेष बल दिया गया है !

वन आश्रित समुदाय के प्रसंग विकास एवं महिलाओं के सशक्तिकरण पर पर्याप्त जोर दिया गया है भोपाल राज्य में भारतीय वन संस्थान स्थित है तथा वनों का सर्वप्रथम राष्ट्रीयकरण मध्यप्रदेश में किया गया है !

वनआश्रित परिवारो हेतु वन आधारित वैकल्पिक रोजगार की सतत उपलब्धता के अवसर निर्मित कराना है

वर्तमान में व्यवस्था पर अतिक्रमण क्षेत्रों को शीघ्रातिशीघ्र सीमांकित करना तथा भविष्य में अतिक्रमण की प्रभावी रूप से रोकथाम करना

वन ग्रामों का राजस्व ग्रामों में परिवर्तन करने की कार्यवाही होने संवेदनशील क्षेत्रों में विशेष सुरक्षा व्यवस्था शुरू करना एवं वन कर्मियों को आवश्यकतानुसार शस्त्र उपलब्ध कराना सुविधाओं का विस्तार करना !

राज्य के प्रमुख वन संस्थान एवं उनके मुख्यालय

1.भारतीय वन प्रबंधन संस्थान :– भोपाल

2.भारतीय वन अनुसंधान संस्थान :– जबलपुर

3.वन राजिक महाविद्यालय :– बालाघाट

4. वन प्रबंधन शिक्षा केंद्रः– बैतूल

5. संजीवनी संस्थानः– भोपाल
6.फारेस्ट गार्ड सृजन स्कूल :– बेतूल ,रीवा ,शिवपुरी, अमरकंटक, लखनादौन
7. प्रादेशिक वन स्कूल :– बेतूल, शिवपुरी, अमरकंटक गोविंदपुर ,झाबुआ

मध्य प्रदेश के शिवपुरी जिले में वन संसाधन :–

भारत के ह्रदय स्थल के रूप में स्थित मध्यप्रदेश प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता विशेषकर वन एवं वन्यप्राणियों की विविधता के लिये जाना जाता है । मृदा और जल के संरक्षक के रूप में वनों की महत्ता अद्वितीय है । मध्यप्रदेश की विभिन्न पर्वत श्रृंखलाएं एवं उनका जलग्रहण क्षेत्र वनाच्छादित होने के कारण ही कृषि एवं कृषि पर आधारित जनसंख्या का पोषण कर पाती है । यहां उष्ण कटिबंधीय शुष्क, पतझड वाले सागौन, मिश्रित तथा साल के वन है । मंडला, डिण्डोरी, शहडोल तथा बालाघाट में साल वन हैं चंबल क्षेत्र ग्वालियर, शिवपुरी, भिण्ड तथा दतिया में करधई तथा झाडीदार वन है, शेष क्षेत्र में बहुमूल्य सागौन वन है । वनों से लकडी के अलावा बांस एवं प्रचुर मात्रा में विभिन्न प्रकार की लघुवनों एवं औषधीय मिलती है । प्रदेश औषधीय पौधों के समृद्ध संसाधनों से भी परिपूर्ण है । चूंकि वनों में तथा वनों की सीमा के आस–पास रहने वाले आदिवासी एवं अन्य ग्रामीण जनता का बहुत बडा भाग वनों पर निर्भर है, अतः वन विभाग का प्रमुख दायित्व वनों का वैज्ञानिक दृष्टि से इस तरह प्रबंधन करना है कि न सिर्फ ग्रामवासियों को वनों से जीविकोपार्जन का स्त्रोत निरंतर बना रहे, बल्कि प्रबंधन में उनकी भागीदारी भी सशक्त हो और वन एक प्राकृतिक धरोहर के रूप में संवहनीय, संरक्षित एवं संवर्धित संसाधन के रूप में विकसित करता रहे ।

सारणी सँख्या :- 3

मध्यप्रदेश के शिवपुरी जिले में वनों की तुलनात्मक स्थिति 2019

भारत वन स्थिति रिपोर्ट 2019

जिला	भौगोलिक क्षेत्रफल	आकलन 2019				भौगोलिक क्षेत्रफल का %	भा.व.स्थि.रि. 2017 के अनुसार परिवर्तन	झाड़ी
		अत्यन्त सघन वन	सामान्य सघन वन	खुले वन	कुल			
शाहडोल[3]	6,205	122.00	820.54	1,028.17	1,970.71	31.76	48.71	43.11
शाजापुर	6,195	0.00	2.44	60.91	63.35	1.02	17.35	69.06
शियोपुर[3]	6,606	6.00	1,395.23	2,058.77	3,460.00	52.38	-26.00	128.96
शिवपुरी	10,066	18.00	779.84	1,742.08	2,539.92	25.23	13.92	202.28
सीधी[3]	4,851	315.99	884.30	768.87	1,969.16	40.59	37.16	90.54
सिंहरौली[3]	5,675	394.41	1,002.52	783.20	2,180.13	38.42	-8.87	53.98
टीकमगढ़	5,048	1.00	89.96	295.68	386.64	7.66	-16.36	132.38
उज्जैन	6,091	0.00	2.60	33.62	36.22	0.59	9.22	61.89
उमरिया[3]	4,076	378.31	1,096.22	548.05	2,022.58	49.62	-9.42	24.00
विदिशा	7,371	1.00	344.91	431.55	777.46	10.55	-25.54	92.95
कुल	**3,08,252**	**6,676.02**	**34,341.40**	**36,465.07**	**77,482.49**	**25.14**	**68.49**	**6,001.91**

स्त्रोत :- वन विभाग , मध्यप्रदेश

मध्यप्रदेश में वन विभाग की स्थापना वर्ष 1860 से ही वनों का वैज्ञानिक प्रबंधन प्रारंभ हो गया था और संभवतः मध्यप्रदेश भारत का पहला राज्य है जहॉ भारत की प्रथम वन नीति 1894 से ही वर्किंग प्लान बनाने का कार्य प्रारंभिक स्तर पर चालू किया गया था । इस गौरवमय परम्परा को आगे बढाने में आज भी वन विभाग गौरवान्वित महसूस करता है ।

शिवपुरी ज़िले में वन्यजीव व वन संसाधन समस्या व संरक्षण :–

कभी हरीतिमा के लिए जाना जाने वाला शिवपुरी जिले में इन दिनों वन अमले की माफिया तत्वों से हमजोली के कारण वन विनाश की खतरनाक इबारत लिखी जा रही है वन्य जीव व जंगलों के विनाश के खेल में अग्रणी जिला घोषित तौर पर भले न हो पर अघोषित तौर पर सबसे ज्यादा इस जिले के वन और वन्यजीव खतरे का सामना कर रहे हैं आज विश्व पर्यावरण दिवस पर कई संस्थाएं वरिष्ठ अफसरों को पर्यावरण का सबसे बड़ा मित्र मानकर उनके आतिथ्य में पौध रोपण करती नज़र आयेंगी पर हकीकत ये है की ये पौधा हर बर्ष रोपा जाता है जिनमें से 90 प्रतिशत पौधे तो अगले बर्ष तक दिखाई ही नहीं देते हैं, जिन जंगलों में पोधा बर्षों बाद विशाल ब्रक्ष बनता है उन जंगलों को राजनैतिक संरक्षण प्राप्त माफिया तत्व इन्ही वरिष्ठ अफसरों की जेब में हिस्सा पहुंचाकर अवैध खदान संचालन व अन्य गैर वानिकी गतिविधियों का कृत्य कर उनका सामूहिक ब्रक्ष संहार करते हैं । गैर वानिकी गतिविधियों के लिए कुख्यात हो चुका ये जिला अपनी प्राक्रतिक छटा को खोता जा रहा है । वन्यजीव संरक्षण, विलुप्त होने के खतरे का सामना कर रहे वन्यजीवों के संरक्षण और प्रबंधन की एक प्रक्रिया है। वन्यजीव हमारी पारिस्थितिकी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। वे जानवर या पौधे ही हैं जो हमारे पारिस्थितिकी तंत्र की सहायक प्रणाली हैं। वे जंगल वाले माहौल में या तो जंगलों में या फिर वनों में रहते हैं। वे हमारे पारिस्थितिक संतुलन को बनाए रखने में मदद कर रहे हैं। अमानवीय क्रियायें वन्यजीव प्राणियों के लुप्त या विलुप्त होने में सबसे बड़ी भूमिका निभा रही हैं। शिवपुरी जिले के जंगली जानवर वन विनाश के कारण गाँव शहरों में घुस रहे हैं ।

शिवपुरी के जंगलों के निकट बसे गांवों में कई कुछ लोग जंगली जानवरों का शिकार कर रहे हैं । हवाई पट्टी के पास एक होटल में मांग पर जंगली जानवरों का गोष्त उपलब्ध कराए जाने के चर्चे हैं । वन और वन्यजीव संरक्षण यह शब्द हमे उन संसाधनों को बचाने की याद दिलाता है जो हमें प्रकृति द्वारा उपहार के रूप में प्रदान किए गए हैं वन्यजीव उन जानवरों का प्रतिनिधित्व करता है जो पालतू या समझदार नहीं हैं वे सिर्फ जंगली जानवर हैं और पूरी तरह से जंगल के माहौल में रहते हैं ऐसे जानवरों और पौधों की प्रजातियों का संरक्षण जरूरी है ताकि वे विलुप्त होने के खतरे से बाहर हो सकें मगर इस जिले में इनके संरक्षण की जगह इनका खात्मा युद्द स्तर पर जारी है और जिस विभाग की जिम्मेदारी इनके संरक्षण की है वे ही इनके सर्वनाश करने वाले तत्वों के संरक्षण दाता बने हुए हैं । डोंगरी पथरोली व बम्हारी में जंगलों में वो विनाशलीला चली कि जो पर्यावरण प्रेमी नज़ारा देखेगा उसकी आँखें नम हो जायेंगी कई बीघा जंगल सत्ताधारी मंत्री के इशारे पर सफाया कर दिया गया सहरिया क्रांति द्वारा मामला संज्ञान में लेन के बाद वन मंडल अधिकारी वहां पहुँचीं तो तीन राउंड हवाई फायर करके उनको उलटे पैर लौटा दिया गया, करोड़ों का पत्थर चोरी करवाने वाले वन अमले पर कार्यवाही की जगह अधिकारीयों ने बलि का बकरा बनाया एक अदना से बीट गार्ड को आज दिनक तक उउन पांच खदानों की लीज निरस्ती का कागज आगे नहीं सरक सका । अब पुनः वहां उत्खनन रात को शुरू हो गया है । इस पूरे खेल में रेंजर का हाथ साफ़ नजर आ रहा है मगर अधिकारी उसको कमाऊ पूत मानकर कार्यवाही तक नहीं कर रहे हैं । नतीजा पूरा जिला अब उसी के नक्शेकदम चलकर अवैध उत्खनन के लिए जंगल में मशीने ले पहुंचा है ,इसका ताजा उदाहरन है मोराई और मझेरा क्षेत्र के जंगल जहां सेंकडों की संख्या में लोग वनकर्मियों की मौन सहमती से जंगल से सफेद पत्थर ले जा रहे हैं ।

बंदरों के झुड़ खेतों को पहुंचा रहे नुकसान

जंगल से बड़ी सख्या में बंदरों के समूह रहवासी इलाकों में पहुंच रहे हैं। इन दिनों जंगलों की अपेक्षा गांवों के खेतों, बगीचों में आम, अमरूद सहित अन्य फलों की बहार है जिसे बंदर खाकर अपनी भूख और प्यास मिटा रहे है हालांकि इन बंदरों के कारण किसानों को नुकसान उठाना पड़ रहा है ।

जंगल में सूख गए जलस्रोत

भीषण गर्मी के चलते जंगल में जलस्रोत सूख रहे हैं। पेड़ों से पत्ते भी झड़ गए हैं, जिस कारण वन्यजीवों के सामने संकट हो चुका है। जंगलों के अंदर अधिकांश जलस्रोत सूख चुके है, सीमित स्थानों पर इन दिनों पानी बचा है। जहां दूर–दूर से वन्यजीवों को आकर अपनी प्यास बुझाना पड़ रही है। पानी के साथ साथ भूख मिटाने की भी समस्या है क्योंकि गर्मियों के कारण पेड़ भी बिना पत्तों के नजर दिखाई दे रहे है जिसके चलते पेट भरना भी कठिन है।

शिवपुरी में वन्यजीवों के विनाश के लिए कई कारक हैं जिनमे से कुछ को हमने यहाँ सूचीबद्ध किया हैः

निवास स्थान की हानि दृ

जिले के वन क्षेत्रों में अवैध खदान संचालन लिए जंगलों की अनावश्यक तरह से कटाई विभिन्न वन्यजीवों और पौधों के निवास स्थान की हानि के लिए जिम्मेदार है। ये गतिविधियाँ जानवरों को उनके घर से वंचित करती हैं। परिणामस्वरूप या तो उन्हें किसी अन्य निवास स्थान पर जाना पड़ता है या फिर वे विलुप्त हो जाते है।

संसाधनों का अत्यधिक दोहन –

संसाधनों का उपयोग बुद्धिमानी से करना होता है, वन के निकट जिला अफसरों से सांठगाँठ कर अनापत्ति प्राप्त कर खनन की लीज करा लेते हैं वाद में लीज एरिया छोडकर जंगलों में खनन शुरू कर देते हैं इससे कई प्रजातियों के घर चीन रहे हैं व विलुप्त होने को बढ़ावा मिल रहा है ।

शिकार और अवैध शिकार –

इस जिले में जानवरों का शिकार खुलकर जारी है कई बार शिकारियों को यहाँ पकड़ा भी गया है पर उनके विरुद्ध ये कार्यवाही न काफी है मनोरंजन के लिए जानवरों का शिकार करना या उनका अवैध तरह से शिकार का कार्य वास्तव में घिनौना है क्योंकि ऐसा करने का मतलब है अपने मनोरंजन और कुछ उत्पाद प्राप्त करने के आनंद के लिए जानवरों को फंसाना और उनकी हत्या करना। जानवरों के कुछ उत्पाद बेहद मूल्यवान हैं, उदाहरण त्वचा, सींग, आदि। जानवरों को बंदी बनाने या उनका शिकार करने और उन्हें मारने के बाद उत्पाद हासिल किया जाता है। यह बड़े पैमाने पर वन्यजीवों के विलुप्त होने के लिए अग्रणी है, जिसका एक उदाहरण सों चिरैया व शिवपुरी में लुप्त होते जा रहे काले हिरण हैं ।

फार्म हॉउस मालिकों के शिकारी कुत्ते

जिले में जंगल की सीमा से लगे कई फार्महाउस मालिकों ने दैत्याकार शिकारी कुत्ते पाल रखे हैं जो वन्य जीवों का शिकार भी करते हैं ये फार्म हाउस मालिक कभी भी बाजार से गोस्त खरीदते नहीं दीखते जिससे सहज समझा जा सकता है कि आखिर इनकी खुराक खान से पूरी होती है ।

निष्कर्ष :–

वनों की सुरक्षा प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है। प्रकृति के दोहन से दूरगामी परिणाम मानव के लिए अच्छे नहीं होते हैं। यही बजह है कि आज हम प्रकृति का असंतुलन होने पर प्रकृति के प्रकोप जैसी आपदाओं को झेल रहे हैं। मनुष्य एक–दूसरे के पूरक हैं। इसलिए हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि प्रकृति की रक्षा के लिए हम अपने आसपास अधिक से अधिक पेड़–पौधे लगाएंगे। प्रकृति के दोहन से प्रकृति अपने परिवेश को बदलती नजर आ रही है यही बजह है कि मानव को इन दिनों भूकंप जैसी स्थितियों का सामना करना पड़ रहा है। हमें पर्यावरण दूषित होने से बचाना चाहिए। क्योंकि पर्यावरण दूषित होने से अनेक प्रकार की बीमारियां फैलती हैं जो मानव के जीवन के लिए घातक हैं।

सन्दर्भ सूची :–

1. सांख्यकीय वन विभाग , मध्यप्रदेश , 2022
2. जिला सांख्यकीय रूपरेखा , जिला शिवपुरी , मध्यप्रदेश ।
3. वन संसाधन व संरक्षण , इंडिया न्यूज , मध्यप्रदेश ।